जलतीर्थों की यात्राएँ

जिस प्रकार शिवायतनों की संख्यानुसार यात्राएँ कहीं गई है, उसी प्रकार जलतीर्थों की भी यात्राओं का पुराणों में वर्णन है।

क. एकतीर्थी यात्रा :

यक्रपुष्ककरिणीतीर्थों स्नातव्यं प्रतिवासरम। १९

अर्थात, मणिकर्णिका में नित्य स्नान करना चाहिए।

ख. द्वितीर्थों यात्रा :

इस यात्रा में दो क्रम हैं :

१. प्रातः पञ्चनदे स्नात्वा मध्याह्न में मणिकर्णिका। २०
२. प्रातः दशाशवमेधे चमध्याह्नेमणिकर्णिकाम्। २०अ

अर्थात, प्रातः पंचगंगा में अथवा दशाशमेध में स्नान तथा मध्याह्न में मणिकर्णिका में स्नान करना चाहिए।

ग. त्रितीर्थी यात्रा :

काश्यां तीर्थत्रयी श्रेष्ठा नित्यं सेव्या प्रयत्नतः।
आदौ प्रयागे तु स्नात्वा पञ्चगङ्गं ततः परम।।
ततः पुष्करिणीतीर्थे स्नात्वा मुच्येत बन्धनात। २१

अर्थात, सबसे पहले दशाश्वमेघ पर प्रयागतीर्थ में स्नान करना, फिर पंचगंगा में और सबके बाद मणिकर्णिका में, दशाश्मेघघाट पर प्रयागेश्वर के पास एक सोता गंगा में पश्चिम से पूर्व की ओर जाकर गिरता है, वहीं प्रयागतीर्थ है। प्रयागेश्वर को इस समय लोग ब्रह्मश्वर, कहने लगे हैं।

घ. चतुस्तीर्थी यात्राः

पुण्ये पिलिप्पिलातीर्थे त्रिसरित्परिसेविते।
ततः पञ्चनदे स्नात्वा मणिकर्णिकाह्रदे ततः।।
ततो ज्ञानोदवाप्यान्तु स्नात्वा विश्वेशमर्चयेत। २२

अर्थात पहले त्रिलोचन घाट पर पिलिप्पिला तीर्थ में, फिर पंचगंगा में, तदुपरान्त मणिकर्णिका में और अन्त में ज्ञानवापी में स्नान करना चाहिए।

ङ. पंचतीर्थी यात्रा :

प्रथमं चासिसंमेदं तीर्थानां प्रवरम्परम्।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

ततो दशाश्वमेधाख्यं सर्वतीर्थनिषेवितम्।।
ततः पादोदकं तीर्थमादिकेशवसन्निधौ।
ततः पञ्चनदम्पुण्यं स्नानमात्रादघौघहृत्।।
एतेषामपि तीर्थनां चतुर्णामपि सत्तम।
पञ्चमं मणिकर्णाख्यं मनोऽवयवशुद्धिदम।। २३

अर्थात, सबसे पहले असिसंगम, तदुपरान्त क्रम से दशाश्वमेध, पादोदक तीर्थ (वरणा-संगम पर), पंचगंगा तथा अन्त में मणिकर्णिका का स्नान करने को पंचतीर्थी यात्रा कहते हैं, जिसका बड़ा माहात्म्य है। ज्ञन पाँच तीर्थो में स्नान करने के उपरान्त इनके निकट देवस्थानों का दर्शन-पूजन भी इसका अंग है। इस प्रकार इस यात्रा का निम्नांकित क्रम है, जो आज कल भी प्रचलित है :

असीसंगम-स्नान तथा असीमाधव (तुलसीघाट के पास), त्रिविक्रम (वहीं), असीसंगमेश्वर (रानी सुरसर के मन्दिर के द्वार पर), लोलार्क (भदैनी में) और अर्कविनायक (लोलार्क के पूर्व) के दर्शन-पूजन के बाद, २. दशामेश्वध-स्नान ओर तदनन्तर दशाश्वमेधेश्वर (बड़ी शीतला में) बन्दी देवी मतान नं. डी. १७/१०० में शूलटंकेश्वर (घाट पर), आदि वाराह (राम-मन्दिर के समीप), सोमेश्वर (राममन्दिर में) दाल्भ्येश्वर (वहीं समीप में), तथा प्रयागमाधव (मकान नं. डी. १७/१११) का दर्शन-पूजन किया जाता है। इसके बाद ३. वरणासंगम पर पादोदकतीर्थ में स्नान तथा आदिकेशव, संगमेश्वर (नीचे-मन्दिर में) खर्वविनायक (राजघाट के किल में पास हीं), केशवादित्य (आदिकेशव के मन्दिर में) ज्ञानकेशव (वहीं), नक्षत्रेश्वर (वहीं) और देवेश्वर (समीप में ही) का दर्शन-पूजन करके लौटते हुए ४. पंचगंगा में स्नान और तदुपरान्त बिन्दुमाधव, गभस्तीश्वर तथा मंगलागौरी का दर्शन-पूजन होता है और अन्त में ५. मणिकर्णिका में स्नान और मणिकर्णी देवी (चक्र-पुष्करिणी में), सिद्धविनायक (वहीं) और मणिकर्णीश्वर (गोमठ में) का दर्शन-पूजन, तथा अन्त में विश्वेश्वर, अन्नपूर्णा तथा ज्ञानवापी की अर्चना करके मुक्तिमण्डप में यात्रा की समाप्ति होती है।

च. षडंग तीर्थयात्रा :

पादोदकासिसंमेधज्ञानोदमणिकर्णिकाः।
षड़ङ्गेऽयं महायोगो ब्रह्मधर्महृदावपि।। २४

अर्थात, वरणासंगम पर पादोदक तीर्थ, असीसंगम, ज्ञानवापी, मणिकर्णिका, ब्रह्मेश्वर के समीप ब्रह्महृद (बालमुकन्द के चौहट्टा में ब्रह्मेश्वर हे) तथा पंचगंगा इन छह तीर्थो के स्नान को षंडगतीर्थी कहते हैं। ब्रह्महृद अब लुप्त है। उसके स्थान पर अहल्याबाई घाट पर गंगाजी में स्नान होता है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.